शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2014

खुसरोकालीन हिन्दी भाषा का स्वरूप

प्रो. मंगला जैन (शोधार्थी)
आई.पी.एस. एकेडमी
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

कबीर और उनके परवर्ती संत कवियों ने समस्त उत्तरी व मध्य भारत में हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित होने का मार्ग प्रशस्त कर भारत की एक व्यापक भाषा का रूप प्रदान किया। अवधी, भोजपुरी, ब्रज, मैथिली, राजस्थान की बोलियाँ और खड़ी बोली अपने-अपने क्षेत्र में विकसित हो रही थी। सूफी संतों की भाषा में भी अरबी-फारसी शब्दों के साथ-साथ देशी भाषाओं के शब्द भी सम्मिलित हो गए। उस समय सूफियाना काव्य की रचना, काव्य विधाओं का निर्धारण व भावी कवियों के लिए विषय चयन का मार्ग प्रशस्त हुआ। अतः हिन्दी सूफी सन्तों की चिरऋणी रहेगी। जिस प्रकार इस देश की सामासिक संस्कृति के विकास में विभिन्न धर्मों, वर्गों और क्षेत्रों का योगदान रहा है, उसी प्रकार से हिन्दी के विकास में भी विभिन्न मतमतांतरों, धार्मिक विश्वासों और प्रदेशों का योगदान रहा है। यह सभी के सहयोग से आगे बढ़ी है। प्रस्तुत शोध पत्र में खुसरोकालीन हिंदी भाषा और अमीर खुसरो के योगदान को रेखांकित किया गया है।

प्रस्तावना

'जोगी र वां रहे तो बेहतर
आबे - दरिया बहे तो बेहतर।'

परिवर्तनशील समाज के साथ-साथ भाषा में भी परिवर्तन होते रहते हैं और आवश्यकतानुसार भाषा में अभिव्यक्ति के नए शब्द और प्रयुक्तियाँ आती रहती हैं जिससे भाषा के सामर्थ्य में वृद्धि होती है यही भाषा का विकास है। कोई भी भाषा सर्वप्रथम एक क्षेत्र विशेष के जन समुदाय की बोली के रूप में विकसित होती है और शब्द संपदा में विस्तार होकर उसकी शैली में भी परिवर्तन आता है। विभिन्न बोलियों के सम्पर्क से विस्तृत बोली समूह का निर्माण होकर संश्लिष्ट एक सम्पूर्ण भाषा का निर्माण होता है व भाषा के विकास और प्रवाह से उसे जीवतंता प्राप्त होती है। कुछ नए शब्द जुड़ते हैं व कुछ शब्द गायब हो जाते हैं। यदि भाषा में यह परिवर्तन नहीं होगा तो उसका स्वाभाविक विकास रुक जाएगा और वह भाषा केवल इतिहास की वस्तु बनकर रह जाएगी। कबीर ने इसीलिए भाषा को 'बहता नीर' कहा था। क्योंकि जिस प्रकार 'बहता नीर' अपने विभिन्न जलस्रोतों का जल लेकर और अधिक वेग से विकास के पथ पर अग्रसर होता है इसी प्रकार भाषा भी विभिन्न स्रोतों से आगत शब्दों से पोषित होकर निरन्तर समृद्धि और जीवतंता प्राप्त करती है। यदि भाषा इस स्रोतों से वंचित हो जाए तो उसकी परिणति भी वैदिक युग की महान् सरिता 'सरस्वती' के समान ही हो जाएगी।

कबीर और उनके परवर्ती संत कवियों ने समस्त उत्तरी व मध्य भारत में हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित होने का मार्ग प्रशस्त कर

भारत की एक व्यापक भाषा का रूप प्रदान किया। अवधी, भोजपुरी, ब्रज, मैथिली, राजस्थान की बोलियाँ और खड़ी बोली अपने-अपने क्षेत्र में विकसित हो रही थी। सूफी संतों की भाषा में भी अरबी-फारसी शब्दों के साथ-साथ देशी भाषाओं के शब्द भी सम्मिलित हो गए। उस समय सूफियाना काव्य की रचना, काव्य विधाओं का निर्धारण व भावी कवियों के लिए विषय चयन का मार्ग प्रशस्त हुआ। अतः हिन्दी सूफी सन्तों की चिरऋणी रहेगी। जिस प्रकार इस देश की सामासिक संस्कृति के विकास में विभिन्न धर्मों, वर्गों और क्षेत्रों का योगदान रहा है, उसी प्रकार से हिन्दी के विकास में भी विभिन्न मतमतांतरों, धार्मिक विश्वासों और प्रदेशों का योगदान रहा है। यह सभी के सहयोग से आगे बढ़ी है।

सच पूछिए तो इस भाषा का हिन्दी नाम भी मुसलमानों द्वारा ही दिया गया था। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में हिन्दी शब्द के दर्शन नहीं होते । श्री पद्मसिंह शर्मा लिखते हैं कि हिन्दी नाम की सृष्टि हिन्दुओं ने नहीं की । हिन्दी शब्द के नामकरण का सारा श्रेय मुसलमानी लेखकों और कवियों को जाता है, जिन्होंने पहले इसे हिन्दुई और हिन्दवी कहा फिर 'हिन्दी'। हिन्दी जब अपने विकास काल में गुजरात से गुजरी तो गुजरी व दकन में पहुँचकर दकनी हो गई।

अमीर खुसरो और हिंदी

अमीर खुसरो ने अपनी रचना खालिकबारी में 55 बार हिन्दवी और 12 बार हिन्दी शब्द का प्रयोग किया। आदिकाल के कवियों में अमीर खुसरो (1253 से 1325) को खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम कवि माना जाता है। दक्खिनी हिन्दी के कई कवियों ने अपनी रचनाएँ इसी भाषा में लिखीं। यही बोली अमीर खुसरो के बाद दक्षिण प्रदेशों में दक्खिनी के रूप में विकसित होकर पुनः उत्तर भारत लौटी और इसने आज की परिनिष्ठित भाषा का रूप धारण किया, जो आज भारत की राजभाषा के रूप में समादृत है।

डॉ.सुनीति कुमार चटर्जी की भी यह मान्यता है कि "विदेशी उद्भव का हिन्दी में लिखने वाला प्राचीन कवि खुसरो है।" भारत में तुर्की का शासन दीर्घकाल तक स्थापित रहा । आरम्भ में परस्पर विरोधी सत्ताओं तथा आचार-विचार का टकराव स्वाभाविक था, वीर काव्य की अधिकतर रचनाएँ इसी युग की उपज हैं । धीरे-धीरे सम्पर्क बढ़ने लगे। जिससे आपसी मेल-मिलाप की भावना जागृत होने लगी । ज्ञानमार्गी कवि तथा 'खुसरो' ऐसे युग की ही देन हैं। इसका प्रभाव प्रेम-भावना, सौहार्द और सहिष्णुता जैसी उदात्त भावनाओं के विकास पर पड़ा। सूफी मत ने इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया। समन्वय तथा सामंजस्य वृद्धि के फलस्वरूप भावना प्रधान प्रेम काव्य एवम् भक्ति काव्य का सृजन हुआ। संतों एवम् सूफी कवियों की मूल प्रेरणा प्रायः एक ही है और इनमें एक जैसा संदेश मिलता है।

इस काल की साहित्यिक परम्परा को देखने से पता चलता है कि उन दिनों के मुसलमान कवि फारसी की भांति (भाखा) तथा संस्कृत में भी साहित्य सृजन किया करते थे। 12वीं शताब्दी के कवियों ने वृत रत्नाकर जैसी छंद शास्त्र की रचनाएँ प्रस्तुत की थी और कुतुबअली मस्जिद हिन्दी में काव्य में रचना करते थे ।

संत और फकीरों ने ही नहीं अनेक मुस्लिम शासकों ने भी हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में अपना सहयोग दिया । अमीर खुसरो को तो हिन्दी मातृभाषा के रूप में विरासत में मिली थी

। इन्हें अपने भारतीय होने पर गर्व था । इन्होंने एक फारसी मसनवी नूह-सिपहर में लिखा है -

"हस्त मेरा मौलिद-ओ मावा ओ वतन" अर्थात् हिन्द मेरी जन्मभूमि मेरी माता और मेरा देश है। अमीर खुसरो अपनी भाषा को हिन्दवी कहते हैं । जो उनके दीवान गुर्रातुल कमाल की भूमिका में व्यक्त विचारों से पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है ।

खुसरो मूलतः फारसी के महान् कवि थे। उन्हें 'तूती-ए-हिन्द' अर्थात् हिन्द की तूती कहा जाता था । किन्तु इन्होंने अपनी मातृभाषा हिन्दवी में भी कविताएँ लिखी थी । वे इस भाषा में लिखने पर गर्व अनुभव भी करते थे । वे कहते थे -

'चूं मन तूती-ए-हिन्द अरारास्त पुरसी
जमन हिन्दवी पूर्स ता नरन गोयम।'

अर्थात् सच पूछो तो मैं हिन्दुस्तान का तोता हूँ । मुझसे हिन्दवी में पूछो ताकि मैं बेहतर उत्तर दे सकूँ ।

अमीर खुसरो अरबी और तुर्की के विद्वान थे, फारसी इनके घर की बांदी थी । खड़ी बोली इन्हें अपनी माँ से विरासत में मिली थी । संस्कृत पर भी इन्हें अधिकार था। इन्होंने अपनी एक मसनवी ख़िज़खां देवल रानी में लिखा है- 'ज्ञान के समर्थक व्यक्ति को ज्ञात होना चाहिए कि संस्कृत का अधिकांश भाषाओं पर अधिकार है।" खुसरो ने भारत का अच्छी प्रकार भ्रमण किया था। उसी के आधार पर उन्होंने भारतीय भाषाओं और यहाँ के लोगों के विषय में दिल खोलकर लिखा। 'नूह सिपहर के तीसरे सिपहर में उन्होंने भारत की खुलकर प्रशंसा की। अपने गुरू निज़ामुद्दीन औलिया के प्रिय शिष्य होने के कारण उनके हिन्दी गीतों का जनसामान्य पर चमत्कारी प्रभाव पड़ता था तथा उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के कारण वे "तूती-ए-हिन्द कहलाए।

भाषाई दृष्टि से खुसरो के जीवन के मध्य एक विभाजक रेखा मिलती है जो उनके समस्त जीवन को दो भागों में विभाजित करने वाली है । वह रेखा स्पष्टतः फारसी और हिन्दी की है। फारसी साहित्य उनके दरबार से अर्थात् शासक वर्ग से सम्बन्ध स्थापित कराता है तो हिन्दी साहित्य शासित अर्थात् सामान्य जनजीवन से । जिस प्रकार वाल्मीकि रामायण को उतनी ख्याति नहीं मिली जितनी तुलसीकृत 'रामचरित मानस' को सामान्य भाषा में प्रस्तुत होकर ख्याति प्राप्त हुई। उसी प्रकार खुसरो को फारसी-साहित्य के रूप में विदेशों व सीमित वर्ग में ख्याति प्राप्त हुई हो पर जनसाधारण में तो उनकी ख्याति जनसामान्य की बोलचाल की भाषा में रचित हिन्दवी साहित्य से ही हुई है। डॉ. भगवती प्रसाद सिंह ने ठीक ही लिखा है कि ".... खुसरो काल निरपेक्ष कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। भारतीय जनमानस पर इनकी कृतियों का इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि उसने इन्हें परिनिष्ठत भाषा के कवि से ऊपर उठाकर लोक कवि के आसन पर बैठा दिया। पृथ्वीराज रासो, आल्हखण्ड जैसे महाकाव्यों की भांति उनकी पहेलियाँ, मुकरियाँ भी पोथियों से निकलकर लोककण्ठ की सम्पत्ति बन गई। खुसरो ऐतिहासिक व्यक्ति थे, किन्तु अपनी हिन्दी रचनाओं से वे लीजेण्ड बन गये, अनुश्रुति और स्मृति लोक के प्राणी हो गये।"1

बाबा फरीद भी हजरत निजामुद्यीन औलिया के गुरु थे। बारह वर्ष वे उनके साथ रहे। बाबा फरीद की कविता गुरु ग्रंथ साहब में मिलती है।

"फरीदा खाक न निंदीय खाक जुड़त कोई।
जीव दिया पेरा तले मुंहआ उपरी होई।।2

अमीर खुसरो की हिन्दी-रचनाओं में पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने, सावन-गीत, बाबुल गीत आदि के अतिरिक्त पुस्तकाकार में 'खलिकबारी' आदि चर्चित और ख्यात हैं। उनकी पहेलियाँ तो इतनी प्रख्यात है कि आजतक लोक जिह्वा पर विराजमान है। खुसरो की इन हिन्दी रचनाओं में लोक तत्व (लोकल कलर) व्यापक रूप में वर्णित है। इससे पता चलता है कि साधना के क्षेत्र में परम ऊँचाई को पाने वाले, फारसी साहित्य-सर्जना के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने वाले, राजदरबार में सर्वोच्च सम्मान और पद के अधिकारी अमीर खुसरो की तद्युगीन सामाजिक जीवन का भी व्यापक अनुभव था।

उनकी हिन्दी रचनाओं के संकलन से स्पष्ट है कि उन्होंने लोक जीवन के छोटे-बड़े सभी पदार्थों, प्राणियों को अपनी हिन्दी-रचना में बेल-बूटे की तरह टाँक लिया है। पशु-पक्षी, श्रृंगार प्रसाधन, नशा-सेवन, जाति-स्वभाव एवम् कार्य व्यापार, आमोद-प्रमोद, आयुध, शारीरिक अंग तथा अन्य विविध उपयोग की तमाम वस्तुओं को अपने हिन्दी काव्य में स्थान दिया है। खुसरो ने हिन्दी काव्य में हाथी, घोड़ा, मच्छर, मक्खी, मैना, कुत्ता, बंदर, तोता, दर्पण, चूड़ी, पान, काज़ल, अंजन, धार, घर, छाता, ढोल, मोरी, आरी, चैकी, नाव, मोढ़ा, लोटा, बादाम, झूला, कुदाल, पैजामा, जादू-टोना, हुक्का, चिलम, तम्बाकू, जड़ी-बूटी औषधि, पंखा, कुँआ, तलवार, बन्दूक, दिया सलाई, कैंची, बांसुरी इन समस्त लोक जीवन और व्यवहार के पदार्थों का परिचय मिल जाता है। वास्तव में अमीर खुसरो लोक जीवन के अमर गायक हैं। अमीर खुसरो के हिन्दी काव्य में लोक तत्व अथवा सामाजिक सन्दर्भ एक ऐसा विषय है जिस पर स्वतंत्र रूप से भी कार्य की अपेक्षा है। लोक तत्व के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

श्रृंगार प्रसाधन - 'नथ':-

''एक नार दखिन से आई, है वो नर और नार कहाई
काला मुँह कर जग दिखलाई, मुए हरे जब बाको पावे।''

'नथ'

''आदि कटे से सबको पाले। मध्य कटे से सबको मारे।
अन्त कटे से सबको मीठा, खुसरो बाको आँखों दीठा।''

'काजल'

जल - जीवनदायक, काल - मारता है, काज - सबको प्यारा। यह शब्द चातुर्य है।

व्यवसाय सम्बन्धित (कुम्हार के लिए):-

'पानी में निस दिन रहे जाके हाड़ न मांस।
काम करे तलवार का फिर पानी में वास।''

कुम्हार चाक पर मिट्टी से बर्तन बनाकर डोरे से काटता है।

नाई:-

''मीठी-मीठी बात बनावे ऐसा पुरूष ओ किसको भावे।
बूढ़ा-बड़ा जो जो कोई आवे उसके आगे सीस नवाये।।

नाखून:-

''बीसो का सिर काट लिया, ना मारा ना खून किया।''

आँख:-

''ऐन मैन है सीप की, आँखें देखी कहती है।
अन खावे ना पानी पीवे, देखे से वे जीती है।।

युद्ध के शस्त्र:-

''एक नार कोए में रहे, बाका नीर खेत में बहै

जो कोई बाके नीर को चखे, फिर जीवा की आरत न राखै।''

चक्की:-

एक पुरुष साहुनर नर, जले पुरुष देखे संसार
बहुत जलै उगै होवे राख, तब इन विरियों का होवे साख।

ताला:-

''बात की बात ठिठोली की ठिठोली
मरद की गाँठ औरों ने खोली।''

लड़की बिदाई की मार्मिक झाँकी

''आगे-आगे बहिना आई, पीछे-पीछे भैया
दाँत निकाले बाबा आए, बुरका ओढ़े भैया।।
'काहे को बियाही बिदेस, सुन बाबुल मोरे।''

गीत:-

''जो पिया आवन की कह गये, अजहुं न आये, स्वामी ऐ हो।''

अम्मा मेरे बाबा को भेजी कि सावन आया।
बेटी तोरी बाबा तो बुड्ढा री, कि सावन आया।

इन उदाहरणों से पता चलता है कि लोक जीवन के निचले धरातल पर अमीर खुसरो जैसे साधक पहुँचते हैं तो मौलाना आज़ाद के शब्दों में - ''बावजूद ज्ञान एवम् प्रतिष्ठा और उच्च काव्यधारा के जब ये लोग नीचे की ओर झुकते थे, तो ऐसी तह पर पहुँचते थे कि धरती की रेत तक निकल लाते थे।''

खुसरो का पालन पोषण दिल्ली में हुआ था। इस तरह दिल्ली की भाषा खड़ी बोली उनकी मातृभाषा अथवा मातृ बोली थी। वे कुछ समय अवध में रहे, तथा अवधी की मिठास से भी भलीभांति परिचित थे। अपने ग्रंथ 'नूह सिपहर' में उस काल की भाषाओं की सूची दी है, उनमें हिन्दी की ये ही दो बोलियाँ हैं। खड़ी बोली नाम उस समय नहीं था। दिहली, दिल्ली की बोली तथा अवधी को अवद अर्थात्! अवध की बोली कहा जाता था। अपनी रचनाओं में इन दो बोलियों के अलावा उन्होंने कहीं-कहीं ब्रज के भी रूप (सोवै, डारै, मेरो, भयो आदि) का प्रयोग किया। इसका कारण यह है कि कोई भी बोली अलग-अलग नहीं थी उनमें मिश्रण था इसके बावजूद खुसरो ने अपनी पहेलियों, मुकरियों, दो सूखनों में खड़ी भाषा का प्रयोग किया व गीतों कव्वालियों में अवधी का प्रयोग किया।

खड़ी बोली:-

''एक थाल मोती से भरा।
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे।
मोती उसमें एक न गिरे।''

पूर्वी अवधी:-

छाप तिलक तज दीन्हों रे तो से नैना मिलाइ कै
प्रेमवटी का मदवा पिला के,
मतवारी कर दीन्हीं रे, मोसे नैना मिला कै।

यों यह उल्लेख है कि उनकी सभी रचनाओं की हिन्दी में कई हिन्दी बोलियों का मिश्रण है, प्राधान्य खड़ी बोली व पूर्वी का है।

''खालिकबारी'' की भाषा भी प्राचीन खड़ी बोली है, यद्यपि उसमें ब्रजभाषा का भी छौंक है और तार जैसे पूर्वी रूप भी। उसमें आए कहिया, रहिया आदि प्रचीन रूप है और आज विकसित रूप कहा, रहा आदि है।

यदि इतिहास में अमीर खुसरो से थोड़ा और आगे जाकर देखें तो औपनिवेशिक दौर में अंग्रेजी आई वह ज्ञान की भाषा बन कर आई। अपना आर्थिक व शैक्षणिक ढांचा ध्वस्त हुआ और फिर अंग्रेजी समर्थक एक खास वर्ग को जन्म दिया। आज भी शिक्षा के निजीकरण ने हिन्दी को दोयम दर्जा देने में खास भूमिका निभाई है।

हमारे लोकतन्त्र में जहाँ धर्म, जाति, भाषा एवम् शिक्षा का प्रश्न आता है तो उसे राजनीति में फंसा दिया जाता है।

खुसरो ने अपनी प्रसिद्ध फारसी मसनवी 'नूह-सिपहर' के तीसरे परिच्छेद में लिखा है- ''इस समय प्रत्येक प्रान्त में एक निज की भाषा बोली जाती है, जो एक-दूसरे से कुछ नहीं लेती। सिंधी, कश्मीरी, लाहौरी, डुंगर की भाषा, द्वार समुद्र, तैलंग, गुजरात, मालाबार, गौंड़, बंगाल, अवध, देहली और उसके पास की। ये सब हिन्द की भाषाएँ प्राचीन समय से जीवन के साधारण कार्य के लिए उपयोग की जाती हैं।

इन तथ्यों से विदित होता है कि दिल्ली के आस-पास की तत्कालीन भाषा का हिन्दी-हिन्दवी नामकरण सर्वप्रथम खुसरो के द्वारा ई.13वीं शती में हुआ था। परवर्ती खुसरो के पश्चात ई. 15वीं शती में सुप्रसिद्ध सूफी कवि जायसी के पद्मावत में हिन्दवी नाम का उल्लेख मिलता है। ई.16वीं शती में दक्खनी के कवि शाहबुरहानुद्दीन ने भी अपनी भाषा को हिन्दवी-हिन्दी कहा है। 17वीं शताब्दी में ये नाम मध्यप्रदेश की भाषा के लिए प्रयुक्त होने लगे थे। गुजरात के कवि इसी को गुजरी व दक्षिण के कवि दक्खनी कहने लगे थे।

ई.18वीं शती भारतीय आर्य भाषा के विकासक्रम में एक महत्वपूर्ण सीमा-चिह्न है। इस शती में आकर एक ओर जहाँ फारसी लिपि में लिखी जाने के कारण हिन्दवी उर्दू के नाम से अभिहित हुई, वहाँ दूसरी ओर नागरी लिपि में लिखी जाने के कारण वही भाषा हिन्दी कही जाने लगी। आज हिन्दी और उर्दू की दो स्पष्ट शैलियाँ पृथक-पृथक भाषाओं के रूप में विकसित हो रही हैं। ये दोनों शैलियाँ वस्तुतः खुसरो की देहलवी या हिन्दवी का ही विकसित रूप हैं।

इस विहंगावलोकन से स्पष्ट है कि हिन्दवी की जो कलम खुसरो ने लगाई थी, वही पुष्पित-पल्लवित होकर विभिन्न नामों से अभिहित होती हुई राजभाषा हिन्दी के पद पर प्रतिष्ठित हुई। इस भाषा की कलम खुसरो कहाँ से लाए थे, इसका उत्तर इन तर्कों के आधार पर मिल सकता है। पर यह निर्विवाद कहा जा सकता कि उसे रोपा उन्होंने अपने ही हाथों से था, तथा उसका नामकरण भी उन्होंने खुद ही किया था। इस प्रकार हिन्दी भाषा के प्रादुर्भाव, नामकरण और अद्यावधि विकास में खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान है।

अमीर खुसरो का हिन्दी के लिए आदि महत्व है। उन्होंने जनसाधारण की बोलचाल में उपने काव्य की रचना की और वह भी हिंदवी के माध्यम से। सूफियाना काव्य की रचना करते हुए उन्होंने काव्य-विधाएं तो निर्धारित की ही, साथ ही भावी कवियों के लिए विषय भी सुझाए। वे कहते हैं

तुर्क ए हिंदुस्तानियम दर हिंदवी गोयम जवाब।।
शक्करे मिस्त्री न दारम कज अख गोयम सुखन।।

अपने हिंदी में जवाब देने और भारतीय नागरिक होने पर बहुत गौरान्वित होते वह कहते हैं - मैं एक भारतीय तुर्क हूँ। मैं हिन्दी में जवाब देता हूँ। मेरे पास अरबों की तरह बात करने के लिए मिस्त्र की शक्कर नहीं है।

अमीर खुसरो की यह हिंदवी परंपरा उनकी फारसी कविता में भी मिलती है। उन्होंने अपनी रुबाइयों, ग़ज़ल, मसनवियों, कसीदों में हिंदी शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग किया है

सुखन शान मार मार सर बसर मार।
व रानी गुफ्त है तीर मार।।

शोखि-ए-हिंदू ब वीं कूदिन बबुर्द अज खास-ओ-आम।

राम-ए-मन हरगिज न शुद हर चंद गुफ्तम राम राम।।

ऐसे भी उदाहरण है जिन्हें दोनों भाषाओं में पढ़ा जा सकता है आरे आरे हमा बयारे आरे-मारे-मारे विरह के मारे आरे। खजायनुल फुतूह में उन्होंने पत्र, कटघर, टीका चंदन, बसीठ, तलवार, अछुआ आदि अनेक शब्दों का प्रयोग किया है।

हिंदी साहित्य के समस्त इतिहास लेखकों ने अमीर खुसरो को खड़ी बोली का पहला कवि माना है। डॉ. रामकुमार ने हिंदी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास में अवधी भाषा का पहला कवि मानते हुए कहा, 'अवधी भाषा के प्रथम कवि अमीर खुसरो थे। उन्होंने सब से पहले ब्रजभाषा के साथ अवधी में भी काव्य रचना की।'

सिद्धो, नाथों की सधुक्कड़ी भाषा और परम्परा अमीर खुसरो को विरासत में मिली थी। यह प्रवृति सूफी संतो, उनकी खाम काहों में फल-फूल रही थी। सहजयानी और वज्रयानी सिद्धों ने प्रतीकों को बड़ी संख्या में हिंदवी में गढ़ा और उसके द्वारा धर्म की पेचीदा समस्याओं को जनता तक पहुँचाया। ये उलटबासियाँ निरतंर हिन्दी में मिलती रहीं। सबसे पहले हिंदी में अमीर खुसरो ने उन्हें अपनाया। राम शब्द का प्रयोग अमीर खुसरो फारसी में भी कहते हैं और हिंदी में भी। उनका राम रमानोरहीम है। वह दिन रात उनके निकट रहता है-

बखत बखत मोहे वा ही आस, रात दिना ओ रहत मो पास।

मेरे मन को करत है सब काम, ए सखी साजन ना सखी राम।

तन मन धन का है वह मालिक, दान दिये, मारे गोद में बालक।

बा से निकसत जी को काम ए सखी साजन ? ना सखी राम।

इस कहमुकरी में अमीर खुसरो ने दान से अल्लाह की रहमत, कृपा और मारे से उसके प्रकोप की ओर संकेत किया है। गोद शरीर का प्रतीक है। यह खुसरो का बनाया हुआ है। बालक आत्मा है जिसका प्रयोग सिद्धों में भी मितला है।

बहुत कठिन है डगर पनघट की।

कैसे मैं भर लाऊँ मधुवा से मटकी।

पनियां भरन को जो गई थी,

दौड़ मोरी पटकी मटकी।

खुसरो निजाम के बलि बलि जइये

लाज राखो मोरे घूंघट पट की।

अनेक प्रतीकों का सहारा लेते हुए अमीर खुसरो ने पनघट को प्रेमस्थल का प्रतीक माना। डगर प्रेममार्ग है। मधुवा इष्क का प्रतीक है। प्रेममार्ग कठिन है। शराबे इश्क मधुभरी मटकी है। अपने-आपको पाना बहुत कठिन है। मटकी फूटती है। अस्तित्व विलीन हो जाता है। घूंघट पर की लाज रहती है। वह अपने पीर की बलाएं लेते हैं। पीर उन्हें रास्ता दिखते है। मटकी की चर्चा कबीर की पंक्ति में भी मिलती है-

मानमति की मटकी सिर पर नाहक बोझ मरोरी,

मटकी पटक मिली पीतम से साहब कबीर कहो री।

प्रेममार्गी सूफी कवियों, संतो और कृष्ण भक्त कवियों ने भी प्रतीकों की इस परंपरा को अमीर खुसरो से ग्रहण करते हुए अपनाया। कृष्ण भक्ति काव्य में कृष्ण गोपियों की मटकी तोड़ते हुए नजर आते हैं। लीला वर्णन को ध्यान से देखा जाए तो विशेषकर रासलीला में कृष्ण परमात्मा

और गोपियां आत्मा की प्रतीक मानी गई है। आत्मा परमात्मा से मिलने के लिए बेचैनी होती हैं-

''एक पुरुष जब मद पर आवे।
लाखों नारी संग लिपटावे।
जब ओ नारी मद पर आवे।
तब वह नारी नर कहलावे।''

पुरुष (अस्तित्व, शरीर) जब मस्ती पर आता है तो लाखों नारियों रूपी इच्छाओं वासनाओं से आशनाई करता है। नारी अर्थात आत्मा जब सुरुर, आंनदातिरेक में आती है तब वह नर परमात्मा कहलाती है।

''एक पुरुष ओ नौ लाख नारी सेज चढ़े वह तिरिया सारी।
जले पुरुष देखे संसार इन तिरियों का यही सिंगार।''

रास लीला जब आध्यात्मिकता पर पहुंच जाती है तो कृष्ण ब्रह्म के प्रतीक और गोपियां आत्मा की प्रतीक बना जाती है।

सगुण भक्तों में प्रेम की यह तल्लीनता और पराकाष्ठा अमीर खुसरो के प्रेम की तल्लीनता से प्रभावित है। अनमिल और ढकोसलों की परम्परा सिद्धों और नाथों से होती हुई अमीर खुसरो तक पहुंचती है। वह उसे अपनाते हुए अनेक अनमिल और ढकोसले लिखते हैं।

अमीर खुसरो से यह परम्परा कबीर की अलटवासियों और सूरदास के पदों में आगे बढ़ती है। हिंदी साहित्य में तसत्वुफ या सूफीमत परम्परा अमीर खुसरो की ही देन है। उनके दोहे, गीतों में तसव्वुफ की चाषनी मिलती है। इष्क आषिक महबूब मिलन विरह सारे भेदभाव समाप्त होने लगते है। सूनी सेज डराने लगती है विरह की अग्नि तेज हो जाती है। अस्तित्व भस्म होने लगता है। प्रेम की इस लल्लीनता की परिकल्पना अमीर खुसरो के काव्य में मिलती है।

पद और गीति काव्य के दर्षन जयदेव के गीत गोविन्द औ विद्यापति की पदावली में होते है। हिंदवी परम्परा में इसका प्रयोग अमीर खुसरो के काव्य में मिलता है। यह परम्परा कृष्ण भक्ति काव्य में भी मिलती है रीतिकाल और आधुनिक काल में भी।

हिन्दी साहित्य लोकतत्वों की अभिव्यक्ति की परम्परा अमीर खुसरो से प्रारंभ होती है। तीज, त्यौहार, बसंत, होली और लोक कथाओं और लोक व्यक्तित्व का वर्णन भी वह करते है। निर्गुण काव्य धारा की दोनों शाखाओं ने उनसे ही प्रेरणा ली और लोक जीवन के निकट आकर काव्य की रचना की। सूफी कवियों ने लोक प्रचलित कहानियों को अपनाया।

आज के दौर में अनुवाद का शोर है। अमीर खुसरो इतने बड़े जनवादी थे कि चम्मो भटियारी और पनिहारिया तक उनको जानती थी। उनका रास्ता रोककर कविता सुनाने का आग्रह करतीं। खुसरो उनसे शब्द लेकर तुरन्त कविता सुना देते। 'अमीर की फारसी कविता यदि विशेषजन के लिए थी तो हिन्दी कविता सर्व-साधारण सबके लिए, जन के लिए थी। उन्होंने हिंदी की बोलियों से शब्दावली ली और जनता के लिए गीत, कव्वाली, दोहे, पहेलियां, कह-मुकरियां लिखी, अनमिला, ढकोसला और दो सुखने भी।

अमीर खुसरो राष्ट्रीय भावनात्मकता के कवि हैं। वतन से मोहब्बत उनका इमान है। मादरे हिंद का हर जर्रा (कण) उनके लिए देवता था। खुरासान और इरान उनकी नजर में भारत के सामने कुछ भी नहीं। भारत के उन्हें बहिष्त (स्वर्ग) दिखाई देता है। हिंदी में अरबी, फारसी

और अनेक बोलियों के प्रयोग की परंपरा के जनक अमीर खुसरो हैं। कबीर और गुरुनानक की कविता भी हिंदवी की इस परम्परा से प्रभावित है उनकी मौलिकता दो भाषाओं को मिलाकर कविता करने में नजर आती है।

अमीर खुसरो की यह परम्परा संत कवियों विशेषकर यारी साहब, दरिया साहब, करकतुल्लाह प्रेमी आदि ने अपनायी। कुराअन शरीफ की आयतों को हिंदी के साथ जोड़कर कविता की। अकबरी दरबार के प्रसिद्ध कवि अब्दुर्रहीम , खानखाना ने हिंदवी की इस रिवायत को अपनी ज्योतिष की प्रसिद्ध 'खेट कैककम' में फारसी के साथ संस्कृत को मिलाकर अपनाया।

''फारसी परमिश्रित ग्रंथा: खलु पंडिते कृता पूर्वा।
सम प्राप्य तत्पदपथं कखाणि खेट कौतुंक पद्यम।।''

इस पुस्तक का अंगरेजी में अनुवाद हो चुका है।

श्लेष अलंकार का प्रयोग हिंदी कविता में विशेषकर रीतिकाल में बिहारी केशव मतिराम देव सेनापति आदि के यहां बहुत मिलता है। आधुनिक काल के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चंद्र के यहां उनकी कहमुकरियों में भी यह अंलकार मिलता है। वह अमीर खुसरो के रंग में अंग्रेजी को निशाना बना कहमुकरियां लिखते हैं।

हिंदवी परम्परा में अनके काव्य रूप और छद, मुक्तक दोहा गीत आदि से हिंदी साहित्य को परिचित कराने का काम अमीर खुसरो करते हैं। रेखता के वह जन्मदाता हैं। अनेकानेक नये और मौलिक विषयों को उन्होंने अपने काव्य का विषय बनाया छोटी से छोटी चीज पर सारगर्भित कविता की । उन्होंने हिंदी को आध्यात्मिकता, सूफी मत और राष्ट्रीय एकता प्रेम और मानवता का मार्ग दिखाया। हमारे देश की सांझी संस्कृति उनके काव्य में जगमगाती-झिलमिलाती दिखाई देती है। उनका फारसी काव्य विपुल है। उनकी लगभग सौ से ज्यादा फारसी पुस्तकें एक पुस्तकालय बनाने की क्षमता रखती है।

निष्कर्ष

हिंदवी परम्परा के इस महान् कवि ने हिंदी भाषा और साहित्य का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने हिंदी को खड़ी बोली का मुकुट पहनाया। फारसी के नगीने लगाए। ब्रजभाषा की मिश्री को मार्धुय दिया। गीतों, दोहों, गजलों के परिधान को अंलकृत किया। लोकजीवन की आत्मा फूंकी। प्रेम-विरह की सुगंध भरी। गुरु के महत्व को प्रकाशित कर आने वाले बाद के साहित्यकारों का मार्गदर्शन किया। सारी दुनिया में लोकप्रिय हुए। बहुमुखी प्रतिभा के धनी अमीर खुसरों वास्तव में हिंदी साहित्य के खुसरो (बादशाह) हैं। उनकी छत्रछाया में हिंदवी की यह परम्परा पल्लवित एवं पुष्पित होकर आगे बढ़ी है।

संदर्भ ग्रंथ

1 अमीर खुसरो - भावानात्मक एकता के अग्रदूत डॉ.मलिक मोहम्मद राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पेज नं. 75,

2 हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विकास में खुसरो का योगदान

3 हिन्दी के मुस्लिम साहित्यकार - डॉ.परमानन्द पांचाल, पेज नं.40-41, भारत-भारती प्रकाशन, 96, मालरोड़, किंग्सवे केम्प, दिल्ली

पत्र-पत्रिकाएँ

1 हिन्दी की प्रयोजनीयता - डॉ.सनत कुमार

2 हिन्दी भाषा के विकास में अमीर खुसरो का योगदान - संतोष डेहरिया, पेज नं. 55 भाषा-मई जून 2010 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय उच्चतर

ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2014

शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
भारत सरकार